अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय-3
शोध की प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावनाः–

अनुसंधान कार्य में सही दिशा की ओर अग्रेसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक है, कि शोध प्रबन्ध की व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाए क्योंकि, यही अभिकल्प शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विषेश भूमिका होती है। जितने न्यादर्श अधिक सदृढ़ होंगे परिणाम उतने ही विश्वसनीय, वैध व परिशुद्ध होंगे। न्यादर्श के चयन के पश्चात् उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण है। इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात् एक उपयुक्त सांख्यिकी से निष्कर्ष निकाला जाता है। तब कहीं जाकर एक शोध रूपी भवन खड़ा हो पाता है।

पी. वी. युंग के शब्दों में "अनुसंधान एक ऐंसी व्यवस्थित विधि है, जिनके द्वारा नीवन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करना है, जिससे प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।"

3.2 शोध प्रविधि

किसी भी शोध कार्य में यह संभव नहीं हो पाता कि, सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाए। अतः समष्टि की समस्त इकाइयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाइयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुना जाता है। उन संकलित इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। इस न्यादर्श के आधार पर ही अध्ययन निष्कर्ष घटित होते हैं। इस अध्ययन में अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

इंग्लिश और इंग्लिश (1980) के अनुसारः–

"प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो, दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए न्यादर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होता है।"

3.3 शोध प्रक्रिया में प्रयुक्त चरः–

अुनसंधान प्रकिया में परिकल्पना संरचना के पश्चात् सम्बन्धित घटना के कारणों से अनुभाविक अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत घटना से सम्बन्धित पूर्वगामी

कारकों एवं पश्चगामी कारकों के स्वरूप को समझना होता है। मुख्य बाह्य कारकों को भी जानना वैज्ञानिक अध्ययन के लिए नितांत आवश्यक है। सप्रत्यात्मक स्पष्ट तथा मात्रात्मक विशुद्धता के आधार पर वैज्ञानिक अनुसन्धानों के इन कारकों को ही चरों की संज्ञा दी जाती है।

गैरेट के अनुसार–"चर ऐंसी विषेशता तथा गुण होता है। जिसमें मात्रात्मक विभिन्नता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।"

1) **स्वतंत्र चरः–**

"साधारणतः प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण होता है, उसे स्वतंत्र चर कहते हैं।"

प्रस्तुत शोधकार्य में स्वतंत्र चर हैः–कक्षा छठवीं के विद्यार्थी

3.4 न्यादर्श का चयनः–

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि, चना गया न्यादर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह न्यादर्श चुना गया है। चुना गया न्यादर्श जब तक सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधि नहीं होता है तब तक न्यादर्श के अध्ययन से प्राप्त परिणाम वैध और विश्वसनीय नहीं होते हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए शोधकर्ता द्वारा भोपाल भाहर के नरेला क्षेत्र के शासकीय हाई स्कूल उमरावदूल्हा बाग विद्यालय के 25 विद्यार्थियों की भाषागत अशुद्धियों का अध्ययन किया है।

शोध के न्यादर्श की विषेशताऐं निम्नलिखित हैंः–

1) इस शोधकार्य के अंतर्गत शासकीय विद्यालय के कुल 25 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।

2) न्यादर्श के रूप में कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों को चुना गया।

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श का चयन निम्न तालिका के अनुसार किया गया।

न्यादर्श विवरण

विद्यालय का नाम	विद्यालय प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या		
		छात्र	छात्रायें	योग
उमराव दूल्हाबाग हाई स्कूल	शासकीय	10	15	25

3.5 उपकरण का निर्माणः–

किसी भी शोधकार्य हेतु आंकड़े एकत्र करने के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन अति महत्वपूर्ण चरण है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं हिन्दी भाषा विषयक लेखन अशुद्धियों के परीक्षण का निर्माण किया गया। शोधकार्य सर्वेक्षण विधि से किया गया।

परीक्षण के निर्माण के बाद हिन्दी भाषाओं से परीक्षण की जॉच कराई गई तथा कक्षा छठवीं के हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षकों से भी सलाह ली। उनकी जॉच व सलाह के अनुसार परीक्षण में आवश्यक सुधार किया गया एवं अन्त में अध्ययन हेतु प्रयुक्त किया।

परीक्षण का विवरण निम्नलिखित हैः–

अ) लेखन अशुद्धियों का परीक्षणः–

लेखन अशुद्धियों के परीक्षण के लिए कक्षा छठवी की हिन्दी पाठ्यपुस्तक में से अपठित गद्यांश लिया गया। इस अपठित गद्यांश का शोधकर्ता के द्वारा सस्वर वाचन किया गया। शोधकर्ता के सस्वर वाचन करने के बाद विद्यार्थियों द्वारा सुनकर अपठित गद्यांश लिखा गया।

(अपठित गद्यांश को परिष्टि में प्रस्तुत किया गया है।)

3.6 परीक्षण का प्रशासनः–

उपकरण के निर्माण के पश्चात् सम्बन्धित विषय शिक्षकों से जॉच करवायी गयी और उसमें आवश्यक सुधार किया गयां तत्पश्चात् शोधकर्ता ने विद्यालय में जाकर प्राचार्य की अनुमति ली। फिर विद्यालय के कक्षा छठवी के कक्षा शिक्षक से मिलकर छात्रों का चयन किया, जिनका परीक्षण करना था फिर विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया।

उपकरण के प्रशासन हेतु शोधकर्ता ने विद्यार्थियों को अलग–अलग जगह पर बिठाया, ताकि कोई एक–दूसरे को देखकर न लिखे। उसके बाद हर एक विद्यार्थी को अपठित गद्यांश लेखन के लिए एक–एक कॉपी दी गयी और लेखन शुरू करने के पहले निम्नलिखित निर्देश दिये गये। इस प्रकार एक के बाद एक ऐंसे दोनों अपठित गद्यांशों का परीक्षण लिया गया।

निर्देशः–

1) सभी विद्यार्थी अपने–अपने स्थान पर बैठें एवं अपने पास अपना पेन व कॉपी रखें।

2) उपर्युक्त स्थान पर अपना नाम, आयु, विद्यालय का नाम, कक्षा, दिनांक लिखें।

3) अपने लेखन को स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखें।

4) गद्यांश लिखते समय अपने साथी की नकल न करें।

5) गद्यांश को सुनकर स्पष्टता से लिखें।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा कक्षा छठवी स्तर पर पढ़ाई जाने वाली हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक में से लेखन अशुद्धियों के परीक्षण के लिए अपठित गद्यांश का स्वयं निर्माण कर शोधकर्ता द्वारा सस्वर वाचन किया गया और विद्यार्थयों द्वारा लिखे गये गद्यांश की जॉच की गई और निम्नलिखित अशुद्धियॉ निकाली गईः–

1. मात्राओं की अशुद्धियॉ
2. अनुस्वार और अनुनासिक की अशुद्धियॉ

1. **मात्रा संबंधी अशुद्धियॉ** :– छात्र प्रायः मात्रा युक्त शब्दों के उच्चारण में भूल करते हैं परिणामतः उनकी वर्तनी में भी भूल करते हैं। जैसे– आ (ा) की मात्रा संबंधी अशुद्धियॉ–

अशुद्ध	**शुद्ध**
अलोचना	आलोचना
अहार	आहार
समाजिक	सामाजिक
अगामी	आगामी
बरात	बारात
परिवारिक	पारिवारिक
सप्ताहिक	साप्ताहिक

उ (ु), ऊ (ू) की मात्रा संबंधी अशुद्धियॉ–

अशुद्ध	**शुद्ध**
हिंदु	हिन्दू
साधू	साधु
प्रभू	प्रभु
गूरू	गुरू
बधु	बधू

'ए', 'ऐ' संबंधी अशुद्धियॉ–

'ऐ' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग करना एवं 'ए' के स्थान पर 'ऐ' का प्रयोग करना–

अशुद्ध	**शुद्ध**
एैनक	ऐनक

फैंकना	फेंकना
भाषाऐं	भाषाएँ
छेनिक	दैनिक
एतिहासिक	ऐतिहासिक

ई (ी), इ (ि) की मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
कालीदास	कालिदास
परिक्षा	परीक्षा
उन्नती	उन्नति
नदीयाँ	नदियाँ
बिमार	बीमार
परिवारिक	पारिवारिक
सप्ताहिक	साप्ताहिक

2. चंद्रबिन्दु और अनुस्वार संबंधी अशुद्धियाँ:–

अधिकतर छात्र अनुनासिक, अनुस्वार एवं चंद्रबिन्दु के अंतर को नहीं समझते, जहाँ जो मन आता है उसका प्रयोग कर देते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध
मुंह	मुँह
पांचवा	पाँचवा
चांद	चाँद
आंख	आँख
दांत	दाँत
उगली	उंगली
कांच	काँच

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रदत्तों के आंकड़ों का विश्लेशण करने के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।